ISSN No. : 2394-0344 **REMARKING :** VOL-1 * ISSUE-5*October-2014

भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण

वीरेन्द्र सिंह
प्राचार्य
दिगम्बर जैन कॉलिज
बड़ौत,बागपत

किरन गर्ग
असि0 प्रोफेसर
दिगम्बर जैन कॉलिज
बड़ौत,बागपत

सारांश

संस्कृति से पर्यावरण एवं मानवता का गहरा सम्बन्ध है। हमारे जीवन का स्त्रोत प्राकृतिक परिवेश को समझना होगा। अतः हमें अपने प्राकृतिक प्रकृति को समझ लेने और अस्तित्व की रक्षा होतु जीवन–संघर्ष में सफल हो जाने के बाद भी कुछ और है, जो आनन्दमय जीवन के लिये नितान्त जरूरी है, जिसे अर्जित करने पर ही वह सच्चे अर्थो में मानव कहलाने के योग्य बन पाता है। मानव जीवन का यह महत्वपूर्ण पक्ष है – मानवता।

इसी प्रयास में व्यवहार के कुछ नियमों का निर्धारण किया गया। जिन्हें हम जीवन मूल्य भी कह सकते हैं। ये जीवन मूल्य नैतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्यों में विभाजित किये जा सकते हैं। यही मूल्य आत्म–अनुशासन के रूप में मानव जीवन के प्रत्येक व्यवहार को नियन्त्रित करते हैं। मानव को मानव एवं समाज के प्रति मानव का प्रकृति जड़ व चेतन के प्रति मानव की समस्त ब्रह्माण्ड के प्रति व्यवहार इन्ही मूल्यों के आधार पर होता है। अतः भारतीय जीवन मूल्य ही भारतीय संस्कृति की विशेषतायें हैं।

मुख्य शब्द : संस्कृति, मूल्य, पर्यावरण, पुरूषार्थ एवं उन्नति।

प्रस्तावना

संस्कृति का अर्थ

संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति 'संस्कार' शब्द से हुई है, जो संस्कार व्यक्ति को सुसंस्कृत बनाते हैं उसे संस्कृति कहते हैं। भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत संस्कारों की बहुत गरिमा है। मनुष्य आजीवन तक विविध संस्कार का निर्वाह करता है। जैसे– नामकरण संस्कार, वेदारम्भ संस्कार, उपनयन संस्कार, विवाह संस्कार, आदि। संस्कार मनुष्य को कर्तव्यों का स्मरण भी दिलाते हैं, और एक आदर्श मानव बनाने हेतु प्रेरित करते हैं। सभी संस्कारों का वैज्ञानिक महत्व भी है। जो व्यक्तियों को स्वस्थ रखकर उनकी बुद्धि का शुद्वीकरण करके मानसिक एवं आत्मिक शक्तियों का विकास भी करते हैं।

अतः साधारण बोलचाल की परिभाषा से संस्कृति का अर्थ–परिष्कृत, रूचिकर, सभ्य या कल्याणकारी गुणों से किया जाता है। अर्थात् किसी भी समाज की सम्पूर्ण जीवन शैली ही उस समाज की संस्कृति होती है या पर्यावरण का वह भाग मानव द्वारा निर्मित होता है, संस्कृति कहा जाता है। इस प्रकार संस्कृति एक प्रतीकात्मक, निरन्तर, संचय और प्रगतिशील प्रक्रिया है, जिसमें ज्ञान विकास, कलायें, नीति, विधि, रीति–रिवाज और समाज के सदस्य होकर मनुष्य द्वारा अर्जित अन्य योग्यतायें और आदतें भी शामिल हैं।

इस प्रकार अपनी संस्कृति का हस्तान्तरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में होता रहता है एवं इसमें सामाजिकता के साथ एकीकृत होने का गुण होता है। अतः संस्कृति कुछ नैतिक व सामाजिक आवश्यकताओं को पूर्ण करती है।

संस्कृति के प्रकार

भौतिक संस्कृति

इसमें भौतिक वस्तुऐं आती हैं। जैसेः– कला–कौशल, रहने का मकान, सामग्री विविध उपकरण, औजार, साहित्य, बर्तन, संचार के साधन आवागमन के साधन आदि।

अभौतिक संस्कृति

इसमें अमूर्त वस्तुऍ आती है। जैसेः– परम्पराऐं, रूढ़ियां, रीति–रिवाज, धर्म, कला, ज्ञान आदि। कहा जा सकता है कि भारतीय जीवन मूल्य ही भारतीय संस्कृति की विशेषतायें हैं। भारतीय संस्कृति की विशेषतायें हैं– जीवन को पूर्णतया के साथ जीने का दृष्टिकोण अर्थात् पुरूषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। सच्चे दिल से की गई प्रार्थना तो ईश्वर अभिव्यक्ति से पहले ही सुन लेता है।

तन की स्वतन्त्रता चरित्र का निखार है।
मन की स्वतन्त्रता विचार की बहार है।
घर की स्वतन्त्रता समाज का श्रृंगार है।

आज पेडों का नहीं, जड़ों का भी बॅटवारा होने लगा, दिलों का बॅटवारा होने लगा। सभ्यता और संस्कृति की जड़े सूखने लगी। वर्तमान पीढ़ी अपनी जड़ों से उलझी प्रतीत होती है। इसलिये चारों और तनावयुक्त जीवन से पर्यावरण भी विषैला होने लगा है। प्रश्न है कि वर्तमान पीढ़ी का अस्तित्व क्या है? "पीढ़ी किसी विशेष समय में होने वाली व्यक्तियों की समष्टि होती है।" दिमाग जब विचलित होता है तो परिस्थितियां समस्या बन जाती है। दिमाग जब स्थिर होता है तो परिस्थितियां समाधान बन जाती है फिर अनुकूल परिस्थितियां अवसर बन जाती है।

आज मीडिया और औद्योगिकरण बढ़ती तकनीकियों के कारण पुरूषों के बहुआयामीत संकल्प इस रेतीले तूफान में कही दब गये हैं। युवाओं के ह्रदय से सेवा भावना, अभिभावकों व गुरूजनों के प्रति सम्मान की भावना जैसे मिट ही गई है। आज पाश्चात्य भौतिकवाद और मीडिया ने जीवन को 'बाढ़ आई नदी के समान' बहने की शाक्ति जो दे दी है।

परिवर्तन

एक प्राकृतिक नियम, मर्यादा का बनना और उसका टूटना। एक सुंदर सृष्टि नष्ट हो जाती है, पुर्ननिर्माण के लिये। भूल जाते हैं कि पीड़ा के माथे पर ही तो आनन्द का तिलक चढ़ता आया है। आज सम्पूर्ण देश में नकारात्मकता का वातावरण है। किन्तु सकारात्मक समाज में उत्साह एवं ऊर्जा उत्पन्न करती है जिससे हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ये सकारात्मकता ईश्वर ध्यान भजन, सेवा से उत्पन्न होती है। सकारात्मकता से युक्त भारतीय संस्कृति समाज के लिये आदर्श अधिक प्रभावी है। उत्साह, उमंग, ऊर्जा एवं सम्पन्नता प्रकृति में जो अच्छी तथा उपयोगी वस्तुए हैं, संस्कृति में उन्ही का सार निहित होता है।

अतः तनावमुक्त जीवन के लिये सांस्कृतिक ज्ञान अति आवश्यक है तभी समाज में सुसंस्कृत पर्यावरण का निर्माण हो सकता है। संस्कार हमारी बुद्धि, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास भी करते हैं। अर्थात् किसी भी समाज की सम्पूर्ण जीवन शैली ही उस समाज की संस्कृति होती है। पर्यावरण का वह भाग जो मानव निर्मित होता है, संस्कृति कहलाता है। इसमें ज्ञान, विश्वास, कलायें, नीति, विधि, रीति–रिवाज और योग्यतायें एवं आदतें शामिल हैं। भारतीय जीवन मूल्य जो व्यक्ति को पुरूषार्थ नैतिक धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्यों द्वारा आत्मअनुशासन में बॉधते हैं यही संस्कृति पर्यावरण है।

पुरूषार्थ

जिसमें ज्ञान, शक्ति, बुद्धि और चारों वर्णो की विशेषतायें हो वही सेवा, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु पुरूषार्थ अर्जित कर सकता है। क्योंकि यहॉ स्वर्ण की खोज मत करो, यहॉ मानव ढलता है संघर्ष से जूझने से बाद ही, ज्ञान सागर छलकता है। हमें पर्वत की ऊँचाई घाटी में खडे होकर नजर आती है। जिनका संघर्षो से सामना हो चुका होता है वह उतना ही मजबूत हो जाता है। सद्विचार यही है कि पुरूषार्थ के उपरान्त ही हमें सत्यम् शिवम् सुन्दरम् जैसे मूल्यों का ज्ञान होता है।

इनके मध्य सामंजस्य की स्थापना होने पर ही गौरवमयी संस्कृति जन्म लेती है। जो समाज के बीच एक स्वस्थ पर्यावरण के निर्माण का आधार होती है। शिक्षक और शिक्षार्थी ही शिक्षा द्वारा अभूतपूर्व क्रान्ति उत्पन्न करके सुन्दर समाज के पर्यावरण में मील का पत्थर साबित हो सकते हैं।

ज्ञान की चिंगारी रोशन रहें, पथ प्रदर्शक गर आप रहेगें।
नियमित शिक्षा के प्रसारण में, वसुन्धरा सम हम बहेंगें।
सात सुरो के संगीत में, मधुरता का गुणगान करेंगें।
आर्शीवाद की खुशबू से, ज्ञान के पुष्प खिलेगें।

नैतिक मूल्य

इनके द्वारा हम परोपकार, दयालुता, स्वच्छ स्नेहयुक्त, निर्मल वातावरण बनाने में योगदान दे सकते हैं। जैसेः– गुरू से शिष्य ने प्रश्न किया कि' महाराज आप सिंहासन पर बैठें हैं और हम जमीन पर। आप ही कहते हैं हम सब एक समान है फिर कथनी और करनी में अन्तर क्यों? गुरू– क्या आपने कभी झरने से पानी पिया? जी बहुत बार। क्या तुम पहाड़ से बहते झरने के पानी को ऊँचाई पर चढ़कर पी सकते हो? नहीं महाराज, गिरने का डर है।

इसी प्रकार ज्ञान, तृष्णा को मिटाने हेतु तुम्हें नतमस्तक होना ही पडेगा। झुकना हमें विनम्रता और कृतज्ञता सिखाती है। इससे हमें अनमोल आर्शीवाद और खुशी मिलती है, नई दिशा मिलती हैं। जिस पीढ़ी के पास अतीत की धरोहर हो, भक्तिज्ञान और धर्म का समन्वय हो, धर्म और साहित्य में एकरसता हो, जीवन और दर्शन में एकरूपता हो वहॉ नैतिक मूल्य–आकाश से भी व्यापक, समुद्र से गहरे और पहाड़ से मजबूत हस्ती का निर्माण करते हैं। बस आवश्यकता है– जीवन में सरलता की। क्योंकि जीना सरल है, प्यार करना भी सरल है। हारना और जीतना भी सरल है लेकिन सरल होना ही सबसे कठिन है।

यदि हम आपस में सम्मान की भावना रखेंगे तो सरल भी हो सकते हैं। जैसे एक दृष्टान्त है कि ''एक बार मोमबत्ती और अगरबत्ती में बहस छिड गई अपने–2 अस्तित्व की। अस्तित्व की लड़ाई ही ईर्ष्या व तनाव भी उत्पन्न करती है। कुछ ऐसा ही हुआ–

मोमबत्ती ने कहा– मेरी रोशनी की किरणों से सबको रोशनी मिलती है। सभी को रोशनी पसन्द है। तुम तो बस जलती ही रहती हो। थोडी ही देर बाद वहॉ ऑधी आई और मोमबत्ती बुझ गई मगर अगरबत्ती की खुशबू सम्पूर्ण वातावरण को सुगन्धित कर नई ऊर्जा दे रही थी, वह बस मुस्कुरा रही थी। इसलिये कमियॉ तो सभी में होती है। सभी में कुछ अच्छाई भी होती है। इसलिये स्वयं को ढूंढो कि हम क्या हैं?

समय का रथ तो चलता ही रहता है। पता नहीं, जैसे– वह चलता ही जाता है रूकता नहीं। यादों के झरोखे से जब झॉकतें है तो अतीत के कुछ पृष्ठ समीक्षा करने को प्रेरित करते हैं कि हमने क्या खोया है? और क्या पाया है? कहीं मंजिलों की ओर बढ़ते कदम पगडंडी से भटक तो नहीं गये। इस भूल भुलैया में हमें नैतिक मूल्य ही मार्ग दिखाते हैं।

धार्मिक मूल्य

जीव, वनस्पति, धरा, नदी, पर्वत, जल, वायु, अग्नि, नक्षत्र, ग्रह व उपग्रह आदि के प्रति मित्रवत् आचरण करने का संकल्प हमें तनावमुक्त कर सकता है, और हम अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। संकल्प जैसा विशाल औजार हमारे हाथ में हैं फिर भी हम असफल क्यों होते है? क्योंकि साहिष्णुता समन्वय, कर्तव्यपालन एवं अनुशासन को हम जीवन में स्थान देना भूल जाते हैं। धार्मिक मूल्य को ही स्वानुशासन एवं संकल्प कहते हैं। इसके लिये हमें कर्तव्यपरायण होना ही होगा। क्योंकि भारतीय संस्कृति कर्म प्रधान है। कर्मानुसार ही पुर्नजन्म होता है, जो कर्म की अनिवार्यता है। शुभेच्छा से युक्त कर्म, कभी निष्फल नहीं होता।

जैसे– ''एक बार एक गॉव में भविष्यवाणी हुई कि यहॉ 14 वर्ष तक वर्षा नहीं होगी फिर भी एक किसान खेत जाता और काम करके लौट आता। एक बार उमडते घूमते बादलों ने कहा कि हमें यहॉ बरसना तो है नहीं फिर ये किसान प्रतिदिन कार्य करता है, क्यों? उन्होने किसान से पूछा तो– किसान ने कहा कि खेत में कार्य करना मेरा धर्म हैं मैं धर्म का निर्वाह नहीं करूंगा तो कर्तव्य से विमुख हो जाऊंगा। बादल आगे बढ़े और फिर रूके– कुछ सलाह की और बरसने लगे। तो किसान ने पूछा आप यहॉ क्यूँ बरसे यहॉ तो भविष्यवाणी न बरसने की थी। बादलो ने कहा– जब तुम अपने कर्म का धर्म निभा रहे हो तो हमारा भी कर्म है– बरसना हम भी अपने कर्म को धर्म मानकर उसका पालन कर रहें हैं।

जब यह धर्म और कर्म हमारा समर्पण बन जाये तो हम आध्यात्मिकता की राह पर चल देते हैं। जहॉ कोई स्वार्थ नहीं होता, सिर्फ समर्पण होता है। यही है हमारा सतसंग–सेवा– भजन – ध्यान। जहॉ समन्वय है निष्ठा और आस्था का, पूजा और उपासना का, ध्यान और भक्ति का, कर्म और धर्म का, समन्वय है परम ज्ञान और सत्य की अनुभूति का जिसमें सम्पूर्ण प्रकृति समाहित है– ''वृक्ष का अर्थ जल, जल का अर्थ अन्न और अन्न का अर्थ जीवन।'' जीवन मूल्य एवं पुरूषार्थ जीवन में उल्लास एवं उमंग का वातावरण बनाये रखने हेतु वर्ष भर पर्वो एवं उत्सवों की श्रृंखला हमारी संस्कृति में परिलक्षित होती है। जिसमें हमारी सामूहिक चेतना को आधार प्राप्त होता रहता है।

यही विचारधारा हमें सत्य से साक्षात्कार कराती है जिसे हम अनीश्वरवाद भी कहते हैं। मानवता के हित में भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण का संरक्षण आवश्यक है तभी हमारा जीवन तनावमुक्त हो सकता है। जैसे सूर्य, नदी, वृक्ष, वन, पर्वत सभी में देने का गुण है। वैसे ही हमें भी एक अभिभावक, शिक्षक या मित्र के रूप में स्नेह, वात्सल्य व आदर के भावों को समर्पित करना चाहिये।

दो शब्द कहकर कुछ कर लो मन की बात
सत्य, अहिंसा प्रेम को, कर लो आत्मसात
रूप रंग है अलग–अलग सुर के स्वर है सात
एक धरा की हम अमानत, खंडो में न इनको बॉट।

सन्दर्भ सूची

1- ब्रेडी नाइल सी0– (1983) दी नेचर एण्ड प्रोपर्टीज ऑफ सोल यूरेजिंग पब्लिशिंग हाऊस (प्रो0) लिमिटेड, न्यू दिल्ली।
2- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान– (1991) मूल्यों को सीखना, सिखाना, जॉब प्रिटिंग प्रेस ब्रहापुरी, अजमेर (राजस्थान)।
3- चड्डा सतीशचन्द्र– (2007) एजेकशनल वेल्यूज एण्ड वेल्यू एजूकेशन, मेरठ सूर्या पब्लिकेशन,
4- डेट वेलर, टी0आर0– मैन्स इम्पैक्ट, ऑन एन्वायरमैन्ट एम0सी0 ग्रेड, न्यूयार्क।
5- डा0 वीरेन्द्र सिंह– (2009) पर्यावरण शिक्षा आर0लाल0 बुक डिपो, मेरठ।
6- डा0 आर0ए0 शर्मा– (2009) पर्यावरण शिक्षा आर0लाल0 बुक डिपो, मेरठ।
7- डा0 नरेश सचदेवा– (2005) बदलते परिवेश में पर्यावरण– शिक्षा की आवश्यकता, परिप्रेक्ष्य, अंक–3, नीपा, नई दिल्ली।
8- डा0 रामशक्ल पाण्डे– (2007) उदयमान भारतीय शिक्षा में शिक्षक की भूमिका, आगरा।
9- देशबन्धु एण्ड जी0 बरबर्ट– (2008) एन्वायरमैन्टल एजूकेशन फॉर कन्जरवेशन डवलपमैन्ट, इण्डियन एन्वायरमैन्टल सोसाइटी, न्यू दिल्ली।
10- पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य– (2007) प्रकृति का अनुसरण, युग निर्माण योजना प्रकाशक, मथुरा।
11- गोयल एम0के0– (2006) अपना पर्यावरण–विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
12- पाण्डेय जे0सी0– (1986) समाज एवं पर्यावरण, प्रगति प्रकाशन राजस्थान प्यूपिल्स पब्लिकेशन हाऊस प्रा0 लिमिटेड, जयपुर।